Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247**
Vol. VIII. 2016 **IMPACT Factor - 3.9651**

अध्यात्म और संगीत के संरक्षक के रूप में सिख गुरूओं का योगदान

डॉ.ओम् प्रकाश चौहान
एसोसिएट प्रोफ़ैसर संगीत
राजकीय महाविद्यालय सोलन
जि. सोलन हि. प्र.

किसी भी युग की सभ्यता एवं संस्कृति के उत्कर्ष का अनुमान उस युग में संगीत की समृ(से लगाया जा सकता है। संगीत मनुष्य के जीवन के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता है फिर चाहे वह लोक संगीत हो या शास्त्रीय संगीत। यह मनुष्य के हृदय की गहन अनुभूतियों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक उत्कृष्ट माध्य**म है।** किसी भी ललित कला का मूल उद्देश्य सौन्दर्य की सृष्टि कर भोक्ता को परमानन्दलीन कर देना होता है। संगीत यही भूमिका अदा करता है। गायन, वादन और नर्तन इन तीनों का समन्वित रूप संगीत कहलाता है। सिख धर्म में संगीत का आध्यात्मिक कार्यो में प्रयोग

सिख धर्म में सभी रचनांए रागब है। गुरूओ का कहना था कि केवल नाम निरंजन को ही सुने, स्पर्श करे, देखें, स्वाद ले, और ममन करें फिर दसवें ताल को ;शु सुरति को नाम शब्द से भरें तब उसे अनाहत शुन्य के तुर वजते प्रतीत होंगे। उसका वास एकाकार के मण्डल में हो जाता है। वह जो एंककार शब्द ब्रह्म है जो केवल स्वर वाणी द्वारा रच सकता है। उसकी अनाहत ध्वनि अन्य ध्वनियों से विलक्षण अद्वितीय एवं आनन्द देने वाली है *अनाहत शब्द में ब्रह्म का निवास है। नानक का कथन है।अनहद शब्द वाजे दिनुराती, अविगत का गति गुरूमुखि जाती'* सिख धर्म में ईश्वर के निर्गण–निराकार स्वरूप की साधना की है। सिख धर्म की यह विशेषता है कि उसने हिन्दू तथा मुसलमानों दोनों ही धर्मो के बीच समन्वय स्थापित किया।'

किसी भी युग की सभ्यता एवं संस्कृति के उत्कर्ष का अनुमान उस युग में संगीत की समृ(से लगाया जा सकता है। संगीत मनुष्य के जीवन के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता है फिर चाहे वह लोक संगीत हो या शास्त्रीय संगीत। यह मनुष्य के हृदय की गहन अनुभूतियों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। किसी भी ललित कला का मूल उद्देश्य सौन्दर्य की सृष्टि कर भोक्ता को परमानन्दलीन कर देना होता है। संगीत यही भूमिका अदा करता है। गायन, वादन और नर्तन इन तीनों का समन्वित रूप संगीत कहलाता है।

सिख धर्म के प्रथम प्रवर्तक गुरू नानक देव ;1469–1536 थे। इसके अतिरिक्त नौ गुरूओ के नाम निम्नलिखित हैं। गुरू अगंद देव ;1504–52द्ध अमरदास ;1479–1574द्ध रामदास ;1534–81द्ध अर्जुन देव ;1563–1606द्ध हरगोबिन्द ;1595–1644द्ध हरिराय ;1631–61द्ध हरिकृष्ण ;1656–64द्ध तेग बहादुर ;1622–75द्ध गुरू गोबिन्द सिंह ;1666–1708द्ध इन्होंने सिख धर्म की परम्पराओं और रीति–रिवाजों का पालन तथा उसके प्रकार–प्रसार करने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

सिख धर्म में संगीत का आध्यात्मिक कार्यो में प्रयोग

सिख ध्र्म में सभी रचनाए रागब है। गुरूओ का कहना था कि केवल नाम निरंजन को ही सुने, स्पर्श करे, देखें, स्वाद ले, और ममन करें फिर दसवें ताल को ;शु(सुरति कोद्ध नाम शब्द से भरेंद्ध तब उसे अनाहत शुन्य के तुर वजते प्रतीत होंगे। उसका वास एकाकार के मण्डल में हो जाता है। वह जो एंककार शब्द ब्रह्म है जो केवल स्वर वाणी द्वारा रच सकता है। उसकी अनाहत ध्वनि अन्य ध्वनियों से विलक्षण अद्वितीय एवं आनन्द देने वाली हैद्ध

अनाहत शब्द में ब्रह्म का निवास है। नानक का कथन है।
अनहद शब्द वाजे दिनुराती, अविगत का गति गुरूमुखि जाती''

रामकली महला–1 गु.ग्र.सा.

सिख ध्र्म में ईश्वर के निर्गण–निराकार स्वरूप की साध्ना की है।

सिख ध्र्म की यह विशेषता है कि उसने हिन्दू तथा मुसलमानों दोनों ही ध्र्मो के बीच समन्वय स्थापित किया।

सिख गुरू–गण का संगीत प्रेम एवं उनके संरक्षित दाढ़ी, मीरासी कलाकारों का विवरण

गुरू नानक देव

मध्यकालीन धर्म–संस्थापकों तथा सन्तों में गुरू नानक देव जी का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन्होंने धर्मिक क्षेत्रा में भक्ति, कर्म और ज्ञान का समन्वय किया और तत्कालीन धर्मिक सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का सम्यक् अनुशीलन एवं विश्लेषण करके संत मार्ग की नींव डाली । इनकी रचना शैली में काव्य का लालित्य, भावों का माधुर्य, विचारों की भव्यता आदि सभी गुण पाये जाते हैं।

गुरू नानक देव जी ने हरिकीर्तन एवं अपने विचारों के प्रचार के लिए आरंभ से ही संगीत का आधर लिया बल्कि ऐसा कहा जा सकता है कि इन्होंने संगीत के पुनरूत्थान के लिए ही अवतार लिया था। संगीत विद्या का ज्ञान इन्होंने किससे प्राप्त किया, इसका उल्लेख नहीं मिलता। न तो इस विषय में इन्होंने स्वयं ही कुछ कहा है और न ही किसी अन्य गुरूने ही इस पर प्रकाश डाला है। अस्तु यही माना जाता सकता है कि यह विद्या इन्हें जन्म के साथ ही ईश्वर–कृपा के रूप में प्राप्त हुई।

गुरू नानक देव जी एक बार अपने मुसलमान मीरासी शिष्य मरदाना के साथ जगन्नाथपुरी गये। साथ में एक मुसलामन होने के कारण उन्हें मन्दिर में प्रवेश करने की आज्ञा न मिली तो उन्होंने बाहर से ही ऐसी आरती गायी कि समस्त जनता आत्मविभोर होकर उनके पा खिंच आयी और उनके पैरों पर गिर पड़ी ।

गुरू नानक देव जी ने संगीत की शक्ति से ही सज्जण नामक ठग को सही अर्थो में सज्जन बना दिया। यह तथ्य संगीत के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को प्रमाणित करता है। घटना इस प्रकार है कि अपने भ्रमणकाल में किसी समय गुरू नानक देव जी किसी सराय में पहुंचे जो आबादी से दूरी पर स्थित थी। इसे सज्जन नाम का एक ठग चलाता था। यात्रियों का विश्वास प्राप्त करने के लिए उसने सराय में मन्दिर, मस्जिद दोनों ही बना रखे थे। यात्राी उसे धर्मिक व्यक्ति समझ कर उसके यहां ठहरते और वह रात्रि में उनकी हत्या कर देता। उस रात वह गुरू नानक देव जी की हत्य करने के लिए उनके कक्ष की ओर बढ़ा लेकिन गुरू जी मरदाना के साथ सूही राग में कीर्तन करने में मस्त थे और भगवान के गुणगान से परिपूरित एवं भक्तिभाव से ओत–प्रोत शब्द के मधुर संगीत ने उस पापात्मा का हृदय परिवर्तन कर दिया। उसके हाथ से कटार छूट गयी, वह गुरू जी के पैरों पर गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा। तभी से वह एक सज्जन व्यक्ति बन गया।[1]

मध्य युग में राग संगीत विलास का साध्न बन चुका था। उसकी फिर से ईश्वर के प्रेम में ढालने का प्रयत्न गुरू जी ने किया। गुरू नानक देव जी के जीवन काल में अरब में स्थित बगदाद नगर में पीर दस्तगीर नाम के एक मुसलमान सन्त की अत्यध्कि ख्याति थी। गुरू जी ने मक्का के अपने भ्रमण–काल में इस नगर की बाहरी सीमा पर कुछ काल वास किया। प्रतिदिन प्रातःकाल वह मरदाना की संगत मं कीर्तन मग्न ही ज्यादा करते थे। इस्लाम ध्र्म में संगीत वर्जित है अस्तु वहां के मुसलमानों ने गुरू नानक देव जी के विरू(पीर दस्तगीर से शिकयत की । पीर इदस्तगीर ने गुरू नानक देव जी को तत्काल कीर्तन रोक देने के लिए आदेश दिया लेकिन गुरू जी ने उस पर ध्यान नहीं दिया और कीर्तन में पूर्ववत संलग्न रहे। पीर दस्तगीर ने आदेश दिया कि इस अधर्मिक कृत्य के लिए उन्हें इस्लाम में विहित दण्ड दिया जाये। इस दण्ड के अनुसार पत्थरों से मारकर अपराधी की हत्या कर दी जाती है। लोग हाथों में पत्थर लेकर पहुचे तो गुरू जी ने उनसे कहा कि यह नमाज पढ़ने का समय है और इसक सर्वप्रथम इसी रूप में सदुपयोग होना चाहिएं इस्लाम में नमाज के लिए निश्चित समय निर्धरित किए गए हैं और

उनमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता। नमाज पढ़ने से पहले अजान का पढ़ा जाना अनिवार्यतः है। गुरू जी ने स्वयं अजान को उच्च और मधुर स्वर में पढ़ा और आखिर में उन्होंने चार वाक्याशों का उच्चारण किया :–

1 अल्लाही अकबर ;अल्लाह सबसे महान् है
2 ला इलाहा इल लिल्लाह ;नहीं है एक अल्लाह के सिवा दूसरा अल्लाहद्ध।
3 हयां अलल फलाह ;कल्याणकारी बातों में प्रवृत हो जाओद्ध
4 सत् श्री अकाल ;केवल ईश्वर ही सत्य है ।

ऐसी वाणी को सुनकर मुसलामन स्तंभित रह गये और उनके हाथों से पत्थर गिर पड़े। कोई एक भी पत्थर गुरू जी को नहीं मार सका। यह सुनकर पीर स्वयं गुरू नानक देव जी के दर्शन के लिए आये और दोनों में संगीत विषयक चर्चा हुई। कहा जाता है कि गुरू नानक देव जी के संगीत विषयक विचारों को सुनकर पीर दस्तगीर अत्यध्कि प्रभावित हुए ।1

इस्लाम ध्र्मानुयायियों को, जो संगीत के विषय में शंकाग्रस्त थे और जो राग गायन को चित को चंचल बनाने वाली वस्तु समझते थे, आश्चर्य हुआ कि गुरू जी किस प्रकार संगत को मुक्ति का साध्न बता रहे हैं। गुरू जी ने उनके समक्ष प्रत्यक्ष प्रयोग करकरे दिखाया कि राग विद्या चित को किस प्रकार एकाग्र करतीहै, मन को द्रवीभूत करती एवं कोमल बनाती है और वह स्वयं अल्लाह अथवा ईश्वर का कल्याणकारी वरदान है। इन सातों स्वरों की रचना इंसान की वृ(से परे है। स्वर का गायन आत्मा की आवाज़ है। जिस प्रकार भाषा विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है, उसी प्रकार मन के आंतरिक भाव राग द्वारा प्रकट किये जाते हैं। ईश्वर के प्रति आत्म निवेदन का इससे बढ़कर दूसरा कोई साध्न नहीं है।

गुरू नानक देव जी ने इस बात को स्वीकार किया है कि अजान के कारण कुछ लोगों ने वासना सम्बन्धी गीत लिखे और इस प्रकार संगीत को कलंकित किया, कुछ लोगों ने पेट पालने के लिए इसे व्यवसाय के रूपमं अपनाया और सांसारिकता की ओर उन्मुख किया। इस प्राकर कुछ लोगों ने बाध्य होकर इसे पतित किया और कुछ ने वासना के वशीभूत होकर इसकी पवित्राता नष्ट की। वस्तुतः दुश्चरित्रा लोगों ने ही राग विद्या को विलास का साध्न बनाया। जब संगीत का संबंध् काम, क्रोध्, मोह आदि भावों के साथ हो जाता है तो उसे दिव्य गुण नष्ट हो जाते हैं। राग को इन बुराईयों से मुक्त करके दत्तचित्त होकर अभ्यास करने से यह चित्त को निर्मल बनाता है और ईश्वरोन्मुख करता है। इससे मन में संतोष की अनुभूति होती है और कला के बन्ध्न से जीव मुक्त रहता है। गुरू जी ने मुसलमानों को चुनौती देते हुए कहा कि संसार की कोई भी शक्ति संगीत को रोक नहीं सकती। चाहे यहूदी हो या मुसलामन, चाहे ईसाई हो या हिन्दू, संसार का कोई भी ध्र्म राग विद्या पर प्रतिबन्ध् नहीं लगा सकता। राजा भी गाता है और रंक भी गाता है। संगीत वही नहीं है जिसमें हुस्न और इश्क के टप्पे गाये जाते हैं वह तो विशु(आत्मा का भोजन है और सांसारिकता से परे है।

इस प्रकार अपनी बातों द्वारा गुरू जी ने बगदाद के संगीत विरोधी मुसलमानों के बीच संगीत की सार्थकता को सि(करते हुए उन्हें यह मानने पर बाध्य कर दिया कि संगीत ईश्वर भक्ति का एक सुगम साध्न है।

गुरू जी ने बगदाद के अतिरिक्त मिस्र, ईरान, काबुल, तुर्किस्तान, तिब्बत, सिक्किम आदि स्थानों पर भ्रमण किया और इन सभी देशों के निवासियों को अपने कीर्तन–संगत से मुग्ध कर दिया ।

गुरू जी ने अपनी समस्त वाणी को रागों से ही उच्चरित किया है। रागों में 'आसा' राग गुरू जी को अत्यन्त प्रिय था, इसी कारण उन्होंने 'आसा दी वार' का कीर्तन गायन किया जिसकी कीर्तन मर्यादा पंचम गुरू गुरू अर्जुन देव जी ने स्थापित की। गुरू नानक देव जी ने अपनी वाणी का गायन उन्नीस ;19द्ध रागों में किया है जो इस प्रकार हैंः–

1)	श्री	2)	माझ	3)	आसा
4)	गौड़ी	5)	गूजरी	6)	वडहंस
7)	सोरठ	8)	ध्नाश्रः	9)	तिलंग
10)	सूही	11)	विलावल	12)	रामकली
13)	मारू	14)	तुखारी	15)	भैरव
16)	बंसत	17)	सारंग	18)	मलार
19)	प्रभाती ।				

गुरू नानक देव जी की राग–संगीत में गहरी पैठ थी। इसके प्रमाण–स्वरूप वे मिश्रित राग हैं जिनके नाम प्रायः शब्दों पर अंकित मिलते हैं। मिश्रित रागों का निर्माण करना साधरण संगीतज्ञ के वश की बात नहीं है। ये मिश्रित राग संख्या में सोलह हैं जो उन उन्नीस शु(रागों के अतिरिक्त हैं जिनका उल्लेख किया चुका है। यह कल्पना करना कि गुरूजी का राग ज्ञान केवल इन पैंतीस ;35द्ध शु(एवं मिश्रित रागों तक ही सीमित था अक्षम्य दुराग्रह होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि गुरू जी ने शब्द–गायन में प्रयुक्त होने वाले रागों की संख्या इसलिए सीमित कर दी ताकि कीर्तनकारों का अध्कि समय असंख्या रांगों के अभ्यास में न लग जाये, कीर्तनकार मन–माने ढंग से शब्दों को विभिन्न रागों में गाना न आरम्भ कर दें, अपितु अनुशासन–ब(रहकर इन निर्देशित रागों में ही कीर्तन करें ताकि कीर्तन की एकरूपता उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक एक समान रूपेण व्याप्त हो।

गुरू जी का उद्देश्य हरि–स्मरण था और यह हरि–स्मरण अनुशासित रूप में तन्मय करने की क्षमता गर्भित संगीत कला के द्वारा करना था। गुरू जी का अभिप्राय अपने शिष्य कीर्तनकारों को शत–प्रतिशत शास्त्राीय गायक बना देना नहीं था, क्योंकि इस प्रकार उनका समस्त ध्यान पूर्णरूपेण संगीत कला पर केन्द्रित हो जाता और कीर्तन के प्रति निष्ठा में किचित् कमी उत्पन्न हो आती। रागों की संख सीमित कर देने के मूल में यही तथ्य निहित प्रतीत होता है।

उन्नीस शु(रागों के नाम प्रस्तुत किए जा चुके हैं, इन सोलह मिश्रित रागों के नाम इस प्रकार हैंः–

1)	गौड़ी–गुआरेरी	2)	गौड़ी–दखणी
3)	गौड़ी–चेती	4)	गौड़ी– बैरागणि
5)	गौड़ी–पूर्वी–दीपकी	6)	गौड़ी–दीपकी
7)	आसा–काफी	8)	वडहंस दखणी
9)	काफी	10)	रामकली–दखणी
11)	मारू–दखणी	12)	बसन्त हिण्डोल
13)	विभास	14)	प्रभाती–विभास
15)	प्रभाती–दखणी	16)	गौड़ी–माला ।

इन नामों में गौड़ी का रूपान्तर गउड़ी भी मिलता है। आज भी भारतीय संगीत में गौरी नाम का राग प्रचलित है। गौड़ी के शु(रूप में शब्दों का गायन सुनने में नहीं आता और न ही शु(गौड़ी का गुरू गन्थ साहिब में उल्लेख मिलता है। इस स्थिति में यह निश्चयपूर्वक कह सकना कठिन है कि उस समय की गौड़ी, जिसके मिश्रणगत रूपान्तर से ये बात मिश्रित राग बनाए गए हैं, वर्तमान गौरी ही है या यह उस समय में प्रचलित कोई राग विशेष था। इन सोलह रागों में पाँच राग ऐसे हैं जिनमें दखणी विशेषण लगा हुआ है। दखणी संभवतः दक्षिणी परिवर्तित रूप है। इन पांचों रागों के नाम इस प्रकार हैंः–

1)	गौड़ी–दखणी	2)	वडहंत दखणी
3)	रामकली–दखणी	4)	मारू–दखणी
5)	प्रभाती–दखणी		

दक्षिणी राग के नाम का उल्लेख प्राचीन एवं तत्कालीन ग्रन्थों में नहीं मिलता। संभवतः दक्षिणी से तात्पर्य दखिण में गाये जाने वाले किसी राग अथवा ध्रुन से था जिसके स्वरों के योग से गुरू जी ने इन रागों की रचना की। गुरू जी समस्त भारत में भ्रमण करते रहे थे अस्तु प्रत्यक अंचल के संगीत का ज्ञान होना और उनका रूचि लेना सर्वथा संभव है।

संगीत के उत्थान में महान संत गुरू नानक देव जी के महत्वपूर्ण योगदान को दृष्टि में रखते हुए इनकी जीवनी प्रमुख अंशों का ज्ञान प्राप्त करना सभी चाहते हैं क्योंकि आपका संगीत प्रेम तब से लेकर आज तक रागब(कीर्तन प्रेमियों के लिए अनवरत प्ररेणा का स्त्राोत है।

गुरू नानक देव जी का जन्म सन् 1469 ईसवीं में तलवंडी नामक स्थान में हुआ जो अब पाकिस्तान में है और ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। इनकी माता 'तृप्ता' थी और पिता 'मेहता कालू' थे। इनका विवाह अठारह वर्ष की आयु में सुलखनी नाम की कन्या से हुआ जिनसे इनके दो पुत्रा श्रीचंद और लक्ष्मीदास हुए। उनके

दोनों ही पुत्रों ने अपने पिता के आदर्शो की ओर ध्यान नहीं दिया और यही कारण था कि गुरू नानक देव जी ने अपने पुत्रों को छोड़कर 'भाई लहना' को अपने बाद र्ध्म चलाने के लिए मनोनीत किया।

ऐसा समझा जाता है कि जैसे इन्सान को बोलने और चलनू की क्षमता सहज नैसर्गिक रूप में प्राप्त होती है, उसी प्रकार संगीत का ज्ञान भी गुरू नानक देव जी को दैवी सम्पदा के रूप में प्राप्त हुआ।

सताइस वर्ष की आयु में ही गुरू नानक देव जी, भाई मरदाना को साथ लेकर मानवता के कल्याण के लिए देश–विदेश भ्रमणार्थ निकल पड़े। मरदाना बजाते थे और गुरू जी लोगों के मन को अपने उपदेशों की ओर आकर्षित करने वाले गीत गाते थे। इन्होंने पूर्व में आसाम तक, दक्षिण में लंका तक, उत्तर में नेपाल और तिब्बत और पश्चिम में मक्का बगदाद तक भ्रमण किया।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि गुरू नानक देव जी अपनी वाणी को . संगीत के माध्यम से ही जनता तक पंहुचाया और आपके पश्चात् अन्य गुरूओं ने भी रागब(संगीत को महत्व देते हुए हरिकीर्तन पर बल दिया। राग गायन ही सिख–कीर्तन की आत्मा है। इस परिप्रेक्ष्य में अन्य सिख गुरूओं द्वारा किए गए योगदान का भी संक्षिप्त आकलन कर लेना होगा।

गुरू अंगद देव

सिख र्ध्म के दूसरे गुरू अंगद देव जी थे। गुरू पद पर प्रतिष्ठित होने से पूर्व आप भाई लहना के नाम से जाने जाते थे। गुरू नानक देव जी ने इनका नाम अंगद रखा था।

इनका जन्म सन् 1504 ईसवीं में पंजाब के फिरोजपुर जिले के सराय नामक स्थान में हुआ । आरंभ में यह देवी दुर्गा के भक्त थे परन्तु गुरू नानक जी के सम्पर्क में आने के पश्चात् ये निर्गुण पंथ के अनुयायी बने।

ये तेरह वर्ष गुरू पद पर आसीन रहे। पंजाबी व गुरमुखी लिपि को प्रचार में लाने का श्रेय इन्हीं को दिया जाता है। आपने गुरू नानक देव जी की वाणी को और उनके जीवन की घटनाओं को संकलित किया।

गुरू अंगद देव जी ने गुरू नानक देव जी के कार्य को जारी रखा। आपने ही अनेक रागों में शब्दों की रचना की। गुरू नानक देव जी का अनुसरण करते हुए आपने भी र्ध्म के प्रचार का माध्यम कीर्तन को ही बनाया। गुरू अंगद देव जी नित्य प्रति स्नान आदि से निवृति होकर 'जपु जी साहिब' का पाठ करने के उपरान्त अपने दरबार के गायकों से 'आसा दी वार' का कीर्तन सुनते थे।

इसी प्रकार संध्या समय जब गुरू जी दंगल आदि देखने से अवकाश पाते तब पुनः दरबार लगता और सत्ता और बलवंड नामक उस समय के दो प्रसि(गायक अपने गायन एवं वादन क्षरा संगत ;श्रोता समाजद्ध का मनोरंजन किया करते। उसके बाद 'सोदर की चौकी' का कीर्तन एवं अंत में 'सोहिले के पाठ' के साथ दरबार विसर्जित होता। आपके दरबार में भाई सद्दू एवं भाई बद्दू नामक दो अन्य रबाबी भी कीर्तन करते थे। गुरू ग्रन्थ साहिब में आपकी वाणी केवल श्लोकों के रूप में संकलित है, जिनकी संख्या बासठ ;62द्ध है।

गुरू अंगद देव जी ने केवल निम्नलिखित आठ रागों में अपनी शब्द रचना को सीमित रखा –

1)	सिरी	2)	माझ
3)	आसा	4)	सोरठ
5)	सूही	6)	रामकली
7)	मारू	8)	मलार

गुरू नानक देव जी की तरह आपने भी अपने दोनों पुत्रों का परित्याग किया और अपने गुरू भक्त शिष्य अमरदास जी को अपना उत्तरदायी बनाया। आपका अंतिम समय 'खादरपुर साहिब' में बीता और वहीं सन् 1552 ईसवीं में आपने नश्वर शरीर त्याग दिया।

गुरू अमरदास

सिख र्ध्म के तीसरे गुरू, गुरू अमरदास जी का जन्म अमृतसर जिले के वसकें नामक स्थान में सन् 1479 ईसवीं में हुआ। आने अपनी र्ध्म–निष्ठा से सिख र्ध्म को विशेष दृढ़ता प्रदान की। आपने विवाह व मृत्यु के अवसरों पर कीर्तन करने का आदेश दिया। आपने गोंदवाल शहर में चौरासी सीढ़ियों से युक्त एक बावली का निर्माण करवाया। गोंदवाल में 'लंगर' की प्रथा शुरू करवायी, जिसमें वर्ण–भेद और छुआछात का परित्याग कर सभी अनुयायी एक साथ प्रसाद पाते थे। कहा जाता है कि किसी अवसर पर स्वयं बादशाह अकबर भी इस लंगर में प्रसाद पाने के लिए उपस्थित हुआ था। अकबर गुरू अमरदास जी से इतना प्रभावित हुआ कि उसने गुरू जी के

लिए एक विशाल भू–भाग भेंट स्वरूप अर्पित किया जिस पर कालान्तर में 'श्री हरमन्दिर साहिब' का निर्माण हुआ और अमृतसर शहर बसाया गया।

गुरू अमरदास जी भी कीर्तन के प्रति विशेष निष्ठावान थे। उन्होंने भी पूर्ववती गुरूओं के समान विभिन्न रागों में वाणी कही। इनकी सबसे प्रसि(रचना 'अनंदु साहिब' है[1] जो राग रामकली में निब(है। यह रचना आज भी उसी तरह गयी जाती है जैसे कि उनके समय में गायी जाती थी।

गुरू अमरदास जी ने अपने पूर्ववर्ती गुरूओं की वाणी के साथ अपनी वाणी को संकलित कर, अपने पौत्रा, सेहस राम के द्वारा दो भागों में लिपिब(करवाया। इसमें आने हिन्दू भक्तों की वाणी को भी सम्मिलित किया।

आपने गुरू नानक नानक जी द्वारा प्रयुक्त 'उन्नीस रागों में से तिलंग और सुखारी रागों को छोड़कर शेष सत्राह रागों में रचना की। 'आदि ग्रन्थ में आपके द्वारा रचित शब्दों की संख्य 907 है। आपकी वाणी की भाषा अत्यन्त–प्रांजल एवं सुबोध् है।

आप गोंदवाल में ही बस गये और सन् 1574 में पंचानवे वर्ष की आयु में परलोकवासी हुए। आपने अपने बाद एक संगीत प्रेमी श्र(वान शिष्य, भाई जेठा को गुरू पद के लिए मनोनीत किया और उनके साथ अपनी ज्येष्ठ पुत्राी बीबी भनी का विवाह सम्पन्न किया। भाई जेठा ही बाद में गुरू रामदास के नाम से प्रसि(हुए।

गुरू रामदास

आपका जन्म 1534 ईसवी में लाहौर में हुआ। आप गुरू अमरदास के जामात थे। आपके पश्चात गुरू प्रथा, जैसा कहा जा चुका है, वंशत्रातानुसार चलने लगी। आपके तीन पुत्रा, पृथ्वीचंद, महादेव और अर्जुन थे।

भाव की दृष्टि से आपकी रचना अन्य गुरूओं की रचना से किंचित् भिन्न हैं। आपकी वाणी का प्रमुख विषय जीवात्मा–परमात्मा के विरू(से उत्पन्न संसार के प्रति वैराग्य भावना है। इनके शब्दों में आत्मा की करूण पुकार सुनाई पड़ती है जो अत्यन्त हृदय–स्पर्शी है और भाव–विभोर कर देने वाली है।

आपने अपने पूर्ववर्ती गुरूओं द्वारा व्यवहृत उन्नीस रागों के अतिरिक्त अन्य बारह रागों में शबद रचना की। इस प्रकार सिख कीर्तन इकत्तीस ;31द्ध रागों में होने लगा। जिन बारह नए रागों में आपने रचना की है, वे इस प्रकार हैंः–

1)	आसावरी[1]	2)	देवगंधरी
3)	बिहागड़ा	4)	जैतश्री
5)	तोड़ी	6)	वैरारी
7)	गौड़	8)	नटनारायण
9)	मालीगौरा	10)	केदार
11)	कानड़ा	12)	कल्याण

भारतीय धर्मिक इतिहास में आपके समान संगीत और साहित्य दोनों में ही निपुण व्यक्तित्व कम ही देखने में आते हैं। आपके द्वारा रचित आसा राग के छंदों में वैराग्य की भावना मुखारित हुई है। आसा राग में कुछ ऐसे स्वरों का प्रयोग होता है जो करूण भावना का आभास देते हैं।

'सूही' राग अपेक्षाकृत चंचल है। अतएव इनके द्वारा सूही राग में रचे हुए शब्दों में आत्मा–परमात्मा की संयोगावस्था की श्रृंगार भावना व्यक्त हुई हैं गुरू ग्रन्थ साहिब में संकलित इनके शब्दों की संख्या 679 है।

गुरू अर्जुन देव

गुरू अर्जुन देव जी का जन्म सन् 1563 ईसवीं में गोंदवान में हुआ। आप गुरू रामदास के सबसे छोटे पुत्रा थे और अठारह वर्ष की आयु में पंचम गुरू के नाम से सिहासनासीन हुए। रचनाओं की संख्या के कारण आपका विशेष महत्व है। 'आदि ग्रन्थ' में आपके द्वारा रचित 2218 शब्द संकलित हैं। गुरू जी संगीत की विद्या में पूर्णतः निष्पात थे। आपके द्वारा निर्मित रचनाओं को देखते हुए आपका संगीत विषयक ज्ञान पूर्णरूपेण प्रभावित होता है। 'ध्ुन' और 'राग' के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए गुरू ने कहा है कि 'जो ध्ुन अथवा राग गाया जाए उसमें ओंकार ;परमात्माद्ध के प्रति प्रीति प्रदर्शित होनी चाहिए। यह सर्वव्यापी है और उसके दर्शन गुरू के माध्यम से ही हो सकते हैं। इसी कारण गुरू जी ने कीर्तन करने वालों को 'चलो चलो रे कीर्तनीआ' कहकर पुकारा है और कहा है कि ''तुम ध्न्य हो जो कीर्तन द्वारा परमात्मा का गुणगान करते हो।''

गुरू अर्जुन देव जी का प्रत्येक शब्द काव्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। आपने अपने पूर्ववती गुरूओं की, अपनी तथा सन्तो की वाणी को राग, घरू और ध्ुन के अनुसार संकलित करके 'गुरू ग्रन्थ साहिब' को स्वरूप प्रदान किया। यह शुभ कार्य आपके द्वारा सन् 1604 ई० में संपादित हुआ।[3]

गुरू जी ने 'हरमन्दिर साहिब' के सरोवर के निर्माण कार्य को पूरा किया। जब मन्दिर पूर्णतः निर्मित हो गया ओर सरोवर जल से पूरित हो गया तो इस नगर का नाम रामदास पुर के स्थान पर 'अमृत–सर' रख दिया गया। गुरू अर्जुन देव ने तरन–तारन, करतारपुर और श्री गोविन्दपुर नामक स्थानों को भी बसाया।

गुरू अर्जुन देव जी ने आदि ग्रन्थ में दिए गए इक्कतीस रागों में से 30 रागों में गायन किया। गुरू अर्जुन देव जी ने गुरू ग्रन्थ साहिब के रागों की समय के अनुसार पांच कोटियों में विभाजित करते हुए उन्हें कीर्तन की 'पांच चौकियों' का नाम दिया।

1. 'आसा की वार' की चौकी
2. आनंद की चौकी
3. चरण कमल की चौकी
4 'सोदरू' की चौकी
5. 'सुख–आसन' या 'कल्याण की चौकी'

यह भी कहा जाता है कि गुरू जी ने 'सारिन्दा' नामक वाद्य का भी आविष्कार किया। अपने शब्दों का गायन आप इस वाद्या की संगत में ही किया करते थे।

सिख–संप्रदाय के गुरूओं में से केवल तीन गुरूओं ने वाणी का उच्चारण नहीं किया, इन गुरूओं के नाम छठे गुरू श्री हरगोबिन्द राय, सातवें गुरू श्री हरिराय और आठवें गुरू श्री हरिकृष्ण हैं।

गुरू हरगोबिन्द राय

आप अपने पिता गुरू अर्जुन देव जी के शहीद होने के पश्चात् दो तलवारें धरण करने लगे जो देश और ध्र्म की रक्षा की प्रतीक थीं। आपका समय सिखों के लिए घोर संघर्ष एवं परीक्षा का समय ाि। गद्दी पर आसीन होने के समय आपकी अवस्था मात्रा ग्यारह वर्ष की थीं आपको भाई बुट्ठा ने ही गुरू सिंहासन पर प्रतिष्ठित किया। आपको घुड़सवारी, शिकार, तलवार, कुश्ती, सैन्य–व्यायाम ;परेडद्ध आदि की सम्यक् शिक्षा दी गई। इन्हें 'सच्चा पातशाह' कहा जाता था।

गुरू हरिराय

आपका जन्म कीतरपुर में सन् 1630 ई. में हुआ। आप बाबा गुरू दित्ता ;गुरू हरगोबिन्द के पुत्राद्ध के सबसे छोटे पुत्रा थे। अन्य गुरूओं की तरह आप भी कीर्तन के प्रति अगाध् श्र(ा रखते थे। करतारपुर निवास काल में आप नित्य–प्रति 'आसा दी वार' का कीर्तन एवं श्रवण करते रहे। इसके अतिरिक्त कीर्तन की अन्य चौकियां भी आपके समय में लगती रही।

गुरू हरिकृष्ण

आप भी अपने पूर्ववर्ती गुरूओं की तरह रागब(कीर्तन के प्रेमी थे। आपने स्पष्ट आदेश दिया था कि आपकी मृत्यु के पश्चात् शिष्यगण विलाप न करके केवल रागब(कीर्तन–गायन ही करेंगे। आठ वर्ष की अल्प आयु में ही आपकी जीवन लीला समाप्त हो गई थी।

गुरू तेगबहादुर

सिख ध्र्म के नौवें गुरू तेगबहादुर का जन्म अमृतसर में सन् 1621 में 'गुरू का महल' में हुआ। आपके पिता श्री गुरू हरगोबिन्द थे । गुरू तेगबहादुर जी द्वारा रचित गुरू ग्रन्थ साहिब में 'संकलित वाणी की संख्या 115 है जिसमें शबद एवं श्लोक दोनों ही सम्मिलित हैं।' आपने इक्तीस रागों में से केवल पन्द्रह रागों में ही वाणी का उच्चारण किया है, जिनके नाम इस प्रकार हैंः– गउड़ी, आसा, देवगंधरी, विहागड़ा, सोरठ, ध्नाश्री, जैतश्री, तोड़ी, तिलंग, बिलावल, रामकली, मारू, बंसत, सारंग और जयजयवंती ।

गुरू गोबिन्द सिंह

गुरू तेग बहादुर जी के शहीद होने के पश्चात सिख सम्प्रदय में एक नया मोड़ आया। गोबिन्द राय केवल नौ वर्ष की आयु में ही अपने पिता की इच्छानुसार गुरू सिंहासन पर आरूढ़ हुए। इनका जन्म 26 दिसम्बर सन् 1666 ईसवीं में पटना में हुआ।

आपको हिन्दी, पंजाबी, फारसी, संस्कृत भाषाओं का ज्ञान करवाया गया और घुड़सवारी, तैरना, तीरंदाजी, तलवार और अनेक प्रकार के अस्त्रा–शस्त्रा चलाना सिखाया गया। गुरू गोबिन्द सिंह जी एक महान साहित्यकार, महान यो(ा एवं संगीत–वेता के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। आपकी कोई भी रचना 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में संकलित नहीं हैं। आपकी काव्य रचना का क्षेत्रा इतना विस्तृत एवं दीर्घकाय है कि उसे एक स्वतंत्रा गन्थ का रूप दिया गया, जिसे 'दशम ग्रन्थ' के नाम से जाना जाता है।

एक बात ध्यान देने योग्य है क नृत्य के प्रति समस्त सिख गुरू केवल उदासीन ही नहीं रहे, बल्कि उन्होंने उसे पूर्णतः त्याज्य समझा। इसके कई कारण हो सकते हैं। एक तो नृत्य में अंगों का संचालन, नेत्राों द्वारा भाव–प्रदर्शन एवं शरीर का तोड़–मरोड़ एवं लचक, विशेषकर स्त्रियों द्वारा किए जाने पर, ह्रदय में कामुकता उत्पन्न कर सकते हैं, दूसरे यह कला वेश्या–समाज के सम्पर्क में आने से इतना गिर चुकी थी कि समाज में इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि स्त्रियों के अतिरिक्त पुरूष भी नाच सकता है। तीसरे, सिख गुरू हिन्दू जाति में 'वीर भावना' भर उन्हें देश और र्ध्म की रक्षा के निमित्त उत्कृष्ट सैनिक बनाना चाहते थे। नृत्य पुरूषों में स्त्रौयता उत्पन्न करता है अस्तु, पुरूषों के लिए इसका त्याग कर देना ही उचित समझा गया। सिख गुरूगण भक्ति की अपेक्षा ज्ञान मार्ग का ही अपना लक्ष्य बनाकर ईश्वरोपासना के मार्ग में आगे बढ़े, इसलिए उनकी उपासना के क्षेत्रा में नृत्य–कला को वह स्थान न मिल सका जो उसे वैष्णव सम्प्रदाय की भक्ति–मार्गी उपासना प(ति से प्राप्त है।

नृत्य को साधरण दृष्टिकोण से दो वर्गो में बांटा जा सकता है– एक 'ताण्डव' और दूसरा 'लास्य' । ताण्डव शिवजी से संबंध्ति नृत्य है जो पुरूषों के लिए उचित है एवं लास्य शरीर की कोमलता तथा भाव भंगिमा से सम्बन्ध्ति होने के कारण स्त्रियों के लिए ही उपयुक्त है। भक्ति परंपरा में ताण्डव और लास्य दोनों ही नृत्यों को स्थान मिला है, लेकिन ज्ञान मार्गी होने के कारण सिखों ने अपने उपासना के क्षेत्रा में इसे स्थान नहीं दिया।

गुरू दरबार के मीरासी एवं दाढी कलाकार

यह तथ्य सर्वविदित है कि सिख सम्प्रदाय के प्रथम गुरू एक महान संगीतज्ञ थे। राग और लयब(कीर्तन को वह ईश–उपासना का आवश्यक अंग समझते थे और इन तत्वों के अभाव में कीर्तन को अधूरा समझते थे। अस्तु स्वर व लय की शु(ता को उन्होंने अत्यध्कि महत्व दिया। उनके पश्चात् अन्य सिख गुरूओं ने भी र्ध्म–प्रचार के लिए संगीत को ही मुख्य साध्न के रूप में अंगीकार किया।

गुरू नानक देव जी के प्रथम कीर्तनकार सहयोगी के रूप में भाई मरदाना का नाम आज भी अमर है। भाई मरदाना इस्लाम र्ध्म के अनुयायी थे और उस वर्ग में भी वह मीरासी जाति में उत्पन्न हुए थे जो मूलतः उन हिन्दू र्ध्मानुनायियों को थी जिन्होंने सद्यः इस्लाम र्ध्म स्वीकार किया था।

कुछ लोगों का कहना है कि मरदाना को रबाब वादन की कला में दक्षता गुरू जी की शिक्षा से प्राप्त हुई।[1] मरदाना अपने संगीत के कारण उस युग की एक विभूति थे, इसमें सन्देह नहीं । गुरू जी सर्व समर्थ थे, अस्तु उनकी कृपा से ही मरदाना ने विशेष दक्षता प्राप्त की, इसमें भी सन्देह के लिए स्थान नहीं।

भाई मरदाना के पुत्रा शाहजादा ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् गुरू नानक देव जी की यात्रााओं में उनका साथ दिया। यह भी रबाब वादन में दक्ष थे।[2]

सत्ता–वलवंड

सत्ता–वलवंड नामों का प्राय युग्म रूप में ही उल्लेख मिलता है। ये दोनों ही गायक कलाकार मीरासी थे। सत्ता–वलवंड युग्म में सत्ता का नाम पहले होने से लोग इन्हें पिता और वलवंड कीी पुत्रा मान लेते हैं लेकिन विद्वानों का मत है कि बलवंड पिता था और सत्ता उनका पुत्रा। कुछ विद्वानों के अनुसार ये दोनों परस्पर भाई थे। ऐसे भी लेखक मिलते हैं जो इन दोनों को मात्रा मरदाना का रिश्तेदार मानते हैं और एक लेखक ने तो इन दोनों को मरदाना का पौत्रा बताया है।[3]

मरदाना के स्वर्गवास के पश्चात बलवंड को ही मुख्य कीर्तनिये की प्रतिष्ठा गुरू नानक देव जी द्वारा प्रदान की गई।

बाबक

'बाबक' शब्द फारसी भाषा का है और इसका अर्थ स्वाभिभक्त ;वफादारद्ध होता है। भाई बाबक गुरू हरगोबिन्द सिंह के दरबार में रबाब–वादक कीर्तनिये थे।[1] लेकिन साथ ही तलवार के भी ध्नी थे। आप कुशल अश्वारोही और महान यो(ा थे। गुरू के एक संकेत पर आप अपने प्राणों की बाजी लगा देते थे। आपने गुरू के पक्ष से मुगलों के साथ यु(करने में वीरगति पायी।[2] इस प्रकार आपने अपने नामक बाबक ;वफादारद्ध को चरितार्थ कर दिखाया।

भाई सद्दू और भाई मद्दू

गुरू गोबिन्द सिंह जी के दरबार में भाई सद्दू और भाई मद्दू रबाबी थे, ये दोनों भाई थे। ये 'आसा दी वार' का कीर्तन करने में कुशल थे।

गुरूओं के समय से सम्बन्धित प्रमुख मीरासियों का परिचय यहां पर प्रस्तु किया गया है और कतिपय का परिचय घरानों के साथ दिया गया है। कुछ ऐसी मीरासी कलाकार भी हो चुके हैं जो न तो कीर्तनकार थे और न घरानेदार कलाकार ही थे।

ढाढ़ी गायक

सिख ध्र्म का जन्म सुख–शान्ति एवं मानव मात्रा में समता की भावना के प्रसार के लिए हुआ था लेकिन ध्र्म और देश की रक्षा के निमित्त इन्हें तलवार धरण करनी पड़ी। ये ढाढ़ी आपने गायन मात्रा से सैनिकों का उत्साहव(न हीं नहीं करते थे अपितु वे रणक्षेत्रा में तलवार भी तोलते थे। संगीतज्ञ होने के साथ–साथ यो(ा होने के कारण ये सिख गुरूओं और सिख–सम्प्रदाय द्वारा विशेष आदृत थे।

भाई नत्था व भाई अब्दुल्ला

ये ढाढ़ी कलाकार गुरू हरगोबिन्द जी के काल में वार गायन के लिए अत्यध्कि प्रसि(हुए। आप लोगों का गायन यो(ाओं की ध्मनियों में वीररस संचारित कर देने में समर्थ थे। भाई अबदुल्ला ढाढ़ी उत्कृष्ट शबद रचनाकार थे।

भाई भीखा, भाई बाल, भाई जलाप, भाई साल

भाई भीखा गुरू अमरदास जी के अनुयायियों में से थे और उनके दरबारी गायक थे। यह रचनाकार भी थे इनके द्वारा रचित दो सवैये 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में संकलित हैं।

भाई बाल गुरू रामदास के शिष्य थे और उत्कृष्ट कवि थे। 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में अपके पांच सवैये संकलित हैं।

भाई जलाप और भाई साल गुरू अर्जुन के दरबार में वारों का गायन करते थे और अपनी कला के लिए विख्यात थे। 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में भाई जलाप के चार सवैये और भाई साल के तीन सवैये संकलित हैं।

गुरूओं के समय में रागब(कीर्तन करने वाले रागी

सिख कीर्तनकारों के नाम के आगे 'रागी' विशेषण लगाने की प्रथा परम्परा से चली आ रही है और इसकी नींव संभवतः गुरू अर्जुन देव जी के समय में पड़ी जिन्होंने सिखों को राग–ब(कीर्तन करने के लिए प्रेरित किया । शास्त्राीय संगीत पर आधरित कीर्तन का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन रागियों की कीर्तन–प्रशिक्षण संस्थाओं में अथवा किसी रागी के शिष्यत्व में अभ्यास करना अपेक्षित होता है। प्रायः किसी गुरूद्वारे में भी यह प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। सम्प्रति कीर्तन एवं शास्त्राीय संगीत विशेषज्ञों द्वारा इनका चयन और स्तर वर्गीकरण होता है। 'रागी' शब्द इस बात का सूचक है कि प्रत्येक व्यक्ति कीर्तनकार भले ही हो सकता है लेकिन वह अपने को 'रागी कीर्तनकार' नहीं कह सकता और न उसकी इस प्रकार की मान्यता सिख समाज द्वारा ही प्रदान की जाती है।

उपर्युक्त रबाबियों के अतिरिक्त कुछ अन्य रागियों ने भी सिख कीर्तन के क्षेत्रा में बहुत नाम पैदा किया है, उनके नाम इस प्रकार हैंः–

भाई हरसा सिंह, भाई गुरूमुख सिंह, भाई ध्यान सिंह, भाई दर्शन सिंह कोमल, भाई बचित्तर सिंह, भाई बतन सिंह, सरदार आत्मा सिंह, भाई गुरमुख सिंह और भाई सम्मुख सिंह 'फक्कर', सरदार ज्ञान सिंह 'अैबटाबाद', ज्ञानी हरिदित्त सिंह, भाई जगत सिंह, भाई ज्वाला सिंह, भाई समुन्द सिंह, भाई खड़ग सिंह, भाई कुन्दन सिंह, भाई लाभ सिहं, भाई सन्ता सिंह, भाई मंसा सिंह, भाई प्रताप सिंह, भाई पूरन सिंह, मास्टर प्रेम सिंह,

भाई शेर सिंह, बाबा शाम सिंह, सन्त सुजान सिंह, भाई सुन्दर सिंह आटा–मंडी वाले, भाई सुर्जन सिंह, भाई ज्ञान सिंह अलमस्त, भाई धर्म सिंह 'जख्मी' और भाई शमशेर सिंह 'जख्मी', भाई रणजीत सिंह, भाई रणजोध सिंह और भाई महां सिंह, बाबा सरदा सिंह, भाई शेर सिंह, भाई उत्तम सिंह, भई बख्सीस सिंह, भाई अवतार सिंह व भाई गुरचरण सिंह, प्रोफेसर दर्शन सिंह, भाई दिलबाग सिंह व भाई गुलबाग सिंह व भाई सतनाम सिंह सेठी इत्यादि ।